nt>
Title: Need to bring HSCL in a working position and demand to pay the balance amount to HSCL by the Steel Authority of India Limited.

श्री हीरा लाल राय (छपरा): माननीय सभापति जी, १९६४ में भारत सरकार ने एच.एस.सी.एल. उपक्रम बनाया था। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि देश में जब इस्पात के कारखाने बन रहे थे, तब उसका योगदान बड़ा पोजीटिव रहा। आज उस पर संकट आया हुआ है, इतना बड़ा निर्माण का यह संयंत्र आज खतरे में पड़ गया है। भारत सरकार उसके नाम को चेंज करना चाहती है या उसको वाइंड-अप करना चाहती है। १५ हजार से ऊपर मजदूर आज वहां भुखमरी के कगार पर खड़े हो गये हैं। एक समझौता हुआ था, सेल और एच.एस.सी.एल. के माध्यम से १९७१ से १९७८ तक जो-जो निर्माण की छोटी या बड़ी वहां पर एजेंसियां हैं, यदि वे काम नहीं कर सकेंगी तो एच.एस.सी.एल. को वह काम दिया जायेगा। इस तरह से जो-जो कम्पनी निर्माण में फेल हुईं, उन सभी कामों को एच.एस.सी.एल. को दिया गया। बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि उस एच.एस.सी.एल. को यह आश्वासन दिया गया था कि तुम्हारे जो मुलाजिम होंगे, उनको भी काम दिया जायेगा। हिन्दुस्तान में यही एक उपक्रम है, जो बड़े-बड़े उद्योग हों या बड़े-बड़े कारखाने हों या बड़ा पुल हो, कुछ भी २४ घंटे के अन्दर टेक-अप कर सकता है। आज उसको सही दिशा देने के लिए उसका जो २६१ करोड़ रुपया सेल पर बकाया है, भुखमरी के कगार पर मजदूर खड़े हुए हैं, इसलिए कि उसको ठेका नहीं दिया जा रहा है। आज प्राइवेट मोनोपोली को और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को ठेका दिया जा रहा है और इतने बड़े निर्माण कारखाने को बन्द करने की साजिश की जा रही है।

मैं भारत सरकार से मांग करता हूं कि एच.एस.सी.एल. की बकाया राशि सेल से दिलवाई जाये और एच.एस.सी.एल. को काम दिलवाया जाये, क्योंकि यह एक कारगर संस्था है।